Safina Kausar

Assistant professor

Department of Home Science

All hafeez College Ara.

B.A Undergraduate (U.G)

paper 5 V

part 3. III

* Topic : प्रसार शिक्षा का इतिहास, अर्थ, परिभाषा, आवश्यकता, महत्व, उद्देश्य, एवं क्षेत्र.
प्रसार शिक्षा का दर्शन एवं सिद्धांत !

* Topic :→ History of Extension Education, Meaning, difinition, Importance. need, fild, Scope.

The phielosophy and principles of Extension Education.

EXTENSION EDUCATION

Introduction

प्रसार शिक्षा जन समुदाय को, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोगों को शिक्षित और जागरूक बनाने की एक विद्या है। जो कि उन्हीं ग्रामीण व्यक्तियों की जरूरतों एवं समस्याओं पर आधारित रहती है। प्रसार शिक्षा ग्रामीणों को अपनी जरूरतों को पुरा करने और अपनी समस्याओं का समाधान खोजने के लिये स्वयं अपनी मदद करने के सिद्धांत को आधार मानकर चलती है। प्रसार शिक्षा ग्रामीणों तक इसी संदेश को पहुँचाती है। तथा इस दिशा में प्रयासशील होने के लिये, इस विकास की ओर जानेवाले मार्ग का अनुसरण करने के लिये प्रसार शिक्षा "Guiding Star" का काम करती है।
इस प्रकार हम देखते हैं कि ये "Teaching and Learning Process" की एक अभिनव शैली है। जो कि मानव व्यवहार मे परिवर्तन लाकर उसे विकासोन्मुख बनाने का सतत प्रयास करती है। ये निश्चित तौर पर कभी ना खतम होने वाली एक शिक्षण - पद्धति है।
प्रसार शिक्षा एक शिक्षण पद्धति होते हुए भी सामान्य शिक्षण अनौपचारिक या औपचारिक शिक्षा से भिन्न होती है, क्योंकी दोनो शिक्षण शैली की शिक्षा-पद्धति मे कुछ Basic differences पाया जाता है, औपचारिक शिक्षण पद्धति मे जहाँ शिक्षा प्राप्त करने हेतु शिक्षण संस्थान जाना पड़ता है, वही दुसरी ओर अनौपचारिक शिक्षा को देने के लिये शिक्षक को ग्रहणकर्ता के पास जाना पड़ता है, तथा अपनी शिक्षण-पद्धति को कामयाब करने के लिये विभिन्न प्रकार के tool का प्रयोग भी करना पड़ता सिखाने की प्रक्रिया को उन्नत बनाना पड़ता है, तथा इस प्रक्रिया मे किसी भी प्रकार का कोई पाठ्यक्रम निर्धारण नही किया जाता है, कोई Grading नही होती है सिर्फ ग्रामीणों की जरूरतों के अनुसार उन्हे प्रेरित कर जागरूक बनाया जाता है।

SK
3.5.2020

HISTORY OF EXTENSION-EDUCATION

*. Introduction

20 वीं सदी के प्रारम्भ में ही ये अनुभव किया जाने लगा था कि ग्रामीण जनता नगरों की ओर आकर्षित हो रही है, अतः उनकी पलायन को रोकना महत्वपूर्ण माना गया क्योंकि बिना ग्रामीण विकास के देश में विकास की कल्पना करना मूर्खता समान होती इसी ग्रामीण नगरीय पलायन को रोकने के उद्देश्य से समकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति रुजवेल्ट ने एक ग्रामीण आयोग का गठन किया था, इसी आयोग की सिफारिशों के आधार पर 1914 ई० में स्मिथ लिवर एक्ट पारित किया गया, तथा ग्रामीण विकास हेतु संस्थागत शिक्षण व्यवस्था के दायरे से बाहर कृषि विस्तार शिक्षा का विस्तार हुआ। तथा कृषि ग्रामीण उद्योग धन्धे तथा ग्रामीण आधारभूत संरचना का विकास समुचित ढंग से किया जाने लगा।

* [विदेश में प्रसार शिक्षा का उद्भव]

प्रसार शिक्षा का उद्भव ब्रिटेन के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में 1873 ई० में हुआ था तथा प्रसार शब्द का प्रयोग वोरहीस ने 1894 ई० में कृषकों तक कृषि सम्बन्धी जानकारियों को पहुँचाने के संदर्भ में किया था। अमेरिका में वर्ष 1880 से 1910 के मध्य प्रसार कार्य का आविर्भाव डा० सीमैन नैप के शैक्षणिक प्रयासों से बढ़ा था, जो कि कपास की खेती एवं उद्योगों से संबंधित था।

3.5.2020

*. HISTORY OF EXTENSION EDUCATION IN INDIA

* भारत में प्रसार शिक्षा का विस्तार और इतिहास

• भारत में प्रसार शिक्षा का विस्तार कृषि संबंधी अनुसंधानों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इंडियन एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना पूसा बिहार में वर्ष 1908 में कि गई जिसे वर्ष 1936 में नई दिल्ली में स्थानान्तरित कर दिया गया था।

•→ वर्ष 1928 में रॉयल कमीशन की सिफारिश पर इम्पीरियल काउन्सिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च की स्थापना हुई। जिसे वर्तमान समय में इण्डियन काउन्सिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च के नाम से जाना जाता है।

•→ राधाकृष्णन कमीशन ने वर्ष 1948 ई० में ग्रामीण विश्वविद्यालय की अनुशंसा की थी, तथा बिहार में एग्रीकल्चरल कॉलेज सबौर में प्रसार शिक्षा के स्नातकोत्तर स्तर तक की पढ़ाई वर्ष 1955-56 में प्रारंभ हुई थी।
तब से देश के सभी कृषि विश्वविद्यालयों तथा गृह-विज्ञान पाठ्यक्रमों के साथ प्रसार शिक्षा की पढ़ाई होती है।

•→ मुख्य रूप से, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, ओडिसा, मध्य-प्रदेश, मैसूर, असम, महाराष्ट्र, बिहार, गुजरात, हिमाचल प्रदेश के सभी कृषि, गृह-विज्ञान विश्वविद्यालयों में इस विषय की पढ़ाई होती है। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय प्रसार शिक्षा एवं समाजशास्त्र में M.Sc की डिग्री प्रदान करता है। तथा कृषि शिक्षण पदाधिकारियों, प्रखण्ड विकास पदाधिकारियों तथा जिला स्तर पर ग्रामीण विकास से जुड़े कार्यकर्ताओं के निमित्त स्नातक स्तरीय प्रसार शिक्षण कार्यक्रम वर्ष 1955 में आगरा तथा नागपुर में प्रारंभ किया गया था।

3.5.2020

* MEANING OF EXTENSION EDUCATION.

प्रसार शिक्षा का अर्थ !

* Introduction

प्रसार शब्द अंग्रेजी शब्द Extension का हिन्दी रूपान्तरण है। Extension शब्द लैटिन भाषा के Tension शब्द से लिया गया है। जिसका अर्थ होता है खिचना अथवा फैलाना तथा Ex का अर्थ Out बाहर है, अतः प्रसार शिक्षा इस प्रकार की शिक्षा है जो ग्रामों मे शैक्षणिक संस्थाओं की सीमाओं के बाहर प्रदान की जाती है।
अतः हम देखते है, कि प्रसार शिक्षा, प्रसार एवं शिक्षा दो शब्दो के मेल से बना है, जब ये दोनो अलग-2 शब्द मिल जाते है तो इनका अर्थ अत्याधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, विशेषकर आधुनिक गाँवो के संदर्भ में, प्रसार शिक्षा का आधार ग्रामीण जीवन हो क्योंकि गाँवो के सर्वांगीण विकास हेतु इस विषय का प्रतिपादन किया गया है।

* [प्रसार शिक्षा का स्वर्णिम युग]

* भारत मे 1950-60 का दशक सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। अक्तूबर 1952 को गाँधी जयन्ती के अवसर पर सामुदायिक विकास योजना का शुभारंभ हुआ था।

* 1954 में ग्रहविज्ञान प्रसार शिक्षा का आविर्भाव हुआ।

* 1955-56 तक भारत के विभिन्न राज्यो के प्रसार प्रशिक्षण केन्द्रों में 21 होम साइंस विंग्स खोले गये तथा ग्राम-सेविकाओं द्वारा प्रसार संबधी शिक्षण-प्रशिक्षण दिया जाने लगा।

3.5.2020

DEFINITION OF EXTENSION EDUCATION :

Page

* प्रसार शिक्षा की परिभाषा !

* Davis :- Extension Education is a Science which deals with the Creation transmission and application of Knowledge designed to bring about planned changes in the behaviour-complex of people, with a View to help them live better by Learning the way of improving their Vocations, enterprises and institutions".

* इसिंजर :- इनकी परिभाषा परिवर्तन के सिद्धांत पर आधारित है। इसमे मनोवृत्ति तथा पद्धति मे परिवर्तन लाने पर बल दिया गया है। इस परिभाषा से स्पष्ट होता है, कि प्रसार - शिक्षा एक ऐसी शिक्षा जिसका मुख्य उद्देश्य उन व्यक्तियों की मनोवृत्ति तथा पद्धति मे परिवर्तन लाना है, जिनके साथ काम किया जाता है।

* Duglus : Extension is an education and that its purpose is to Change that attitude and practices of the people with whom the work is done.

SK
3.5.2020

Scope OF EXTENSION EDUCATION.

प्रसार शिक्षा का क्षेत्र

* Introduction :→

प्रसार शिक्षा का क्षेत्र बहुत विस्तृत very wide है, सामान्यतः यह कह सकते है कि प्रसार शिक्षा ग्रामीण जीवन के सभी पक्षों को उन्नत करने के काम आती है ये पहलू है। (1) Economicaly, Social, Cultural. जो कि ग्रामीण उत्थान के लिये महत्वपूर्ण है।

(1. आर्थिक Economic.

(1) आय मे वृद्धि करके कृषि और अन्यान्य व्यवसायो मे व्यर्थ की जमीन का प्रयोग, गुणवर्णक बिज प्रयोग विज्ञान की सहायता लेकर, उन्नत कृषि, पशुपालन की व्यवस्था करके, | खर्च कम करके कुटीर उद्योग, लघु उद्योग, रोजगार सुविधा बढ़ा कर

(2). 2. सामाजिक Social.

समाज संबधी
उचित जीवन शैली का प्रयोग, उचित दृष्टिकोण का निर्माण करवाना, झगडो, गुटो मे बँटने की नीतियों का बहिष्कार

जनस्वास्थ्य संबधी
संतुलित आहार
जलापूर्ति
परिवार नियोजन
पालन पोषण !

(3.) सांस्कृतिक Cultural

शिक्षा	खेल शारीरिक व्यायाम	मनोरंजन
(a) अनिवार्य शिक्षा।	ग्रामीण खेलो का आरम्भ	फिल्म
(b) व्यस्क, प्रौढ़ शिक्षा।	व्यायाम व्यवस्था	ड्रामा
(c) शिल्प-प्रशिक्षण।	योगक्रिया	मेला
(d) अल्पावधि प्रशिक्षण सुविधा		प्रदर्शनियाँ
		पर्व-त्योहार

3.5.2020

Philosophy of Extension Education

Date / /
Page

* Introduction

प्रसार शिक्षा दर्शन

फिलोसफी ग्रीक भाषा का शब्द है, जिसका प्रयोग सबसे पहले प्लेटो ने रिपब्लिक नामक पुस्तक में किया था, जिसका अर्थ होता है, सत्य के प्रति निष्ठा एवं लगाव।

दर्शन किसी भी काम को करने के लिये प्रेरित करने की एक जीवन शैली है जो अपनी दिशा भिन्न-2 रूप से निर्धारित कराती है। हम इसे इस प्रकार समझने का प्रयास करते हैं कि महात्मा गाँधी और नेता जी दोनो इस बात पर सहमत थे कि भारत को विदेशी शासन से मुक्त कराना है, दोनो का समान लक्ष्य होते हुए भी, गाँधी जी ने अहिंसा का मार्ग अपनाया जबकि नेता जी ने हिंसा को मार्ग बनाकर आजादी की लड़ाई लड़ी, क्योंकी दोनो का आजादी के प्रति अपना-2 दर्शन था।

*. भारत मे प्रसार शिक्षा को शुरु करने वाले एसमिंजर साहब के अनुसार The guiding Phelosophy of Extension work should always be the development of village family in the relationship to the village and the rest of its word.

* प्रसार शिक्षा के कार्यक्रम के उद्देश्य और उन्हे क्रियान्वित करने के तरीके ही प्रसार शिक्षा के दर्शन होते है।
चूंकि प्रसार शिक्षा मानव व्यवहार में उसके ज्ञान, मनोवृत्ति और कौशल में वांछित परिवर्तन लाने का कार्य करती है ये सत्य आधारित लक्ष्य होते है तथा इसके तरीके श्रेष्ठ तथा उत्तम होते है। और वे guiding star का काम करते है इन बातों को देखते हुये ये कहा जा सकता है कि प्रसार शिक्षा का मूलदर्शन भारतीय दर्शन ही है।

3.5.2020

Principles of Extension Education.

प्रसार शिक्षा के सिद्धांत

* Introduction

प्रसार शिक्षा के सिद्धांत को हम 20 प्रकार से वर्गीकृत करते हैं।

(1) सांस्कृतिक विभेद का सिद्धांत, Principle of Cultural differences.
(2) सांस्कृतिक परिवर्तन का सिद्धांत, " of Cultural Changes.
(3) सहयोग, सहकारिता का सिद्धांत, " " Cooperation and participation
(4) जड़ से प्रारंभ करने का सिद्धांत, " " grassroot approach.
(5) रुचि आवश्यकता का सिद्धांत " " need based programme.
(6) सहायिक स्वयं की सहायता का सिद्धांत, Principle of aided self help.
(7) कर के सिखने का सिद्धांत।
(8) स्थानीय संसाधनों के प्रयोग का सिद्धांत, Use of Local resources.
(9) प्रशिक्षित विशेषज्ञों का सिद्धांत, Principle of traind specialists.
(10) स्वेच्छा से शिक्षा का सिद्धांत।
(11) शिक्षण विधियों का सिद्धांत। Principle of teaching methods
(13) सन्तुष्टि का सिद्धांत : Principle of Satisfaction.
(14) सम्पूर्ण परिवार का सिद्धांत : whole family approach.
(15) नमनीयता का सिद्धांत : Principle of flexibility.
(16) समसमानता का सिद्धांत, Principle of the help of local
(17) तटस्थता का सिद्धांत : " " neutral non. agencies.
18 प्रोत्साहन का सिद्धांत, Principle of persuasion, motivation and encouragement.
(19) अभिप्रेरणा और अनुनय का सिद्धांत :
(20) मूल्यांकन का सिद्धांत :, Principle of evaluation.

ये सारे सिद्धांत प्रसार शिक्षा के आधार-स्तंभ हैं ये इन्ही पर आवृत है, और इन्ही के सहारे खड़ी है।